हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-HL3

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): BIKRAM GANGWAR

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.): ______

ई-मेल पता (E-mail address): ______

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 13/08/2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Bikram

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 36

टिप्पणी (Remarks): प्रयास संतोषजनक है। उत्तरों को और बेहतर बनाने का प्रयत्न करते हैं। भेजे टिप्पणियों पर ध्यान दें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली–9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: 10 × 5 = 50

(क) खड़ी बोली के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका

खड़ी बोली दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के आस पास पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान के जिलों में बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी उपभाषा के अंतर्गत एक बोली है। इसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है।

खड़ी बोली ने अपनी सहोदर बोलियों की तुलना में अपनी सेत्रीयता का अतिक्रमण तो मुगलों के समय से ही बाजार-वाणिज्य की भाषा के रूप करना शुरु कर दिया था परन्तु इसने राष्ट्रीय स्वरूप ब्रिटिश काल में ग्रहण किया।

अंग्रेजी काल में ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म के प्रचार हेतु भारत में प्रवेश किया। इनका उद्देश्य प्रमुखता से अपने धर्म

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का प्रसार ही था परन्तु इसके लिये उन्हें ऐसी जनभाषा को माध्यम के रूप में अपनानी पड़ी जो व्यापक जनसमूह को सम्बोधित कर सके।

मिशनरियों ने अपनी धार्मिक मान्यताओं के प्रसार के लिये कुछ खड़ी बोली में पुस्तिकायें प्रकाशित की जिनमें ग्राम्य धर्मों की बुराइयों को रेखांकित किया और खुद के धर्म के उज्ज्वल पक्षों को। उस दौर में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना के बाद खड़ी बोली हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ भी रही थी। फादर कामिल बुल्के का योगदान इस सन्दर्भ में उल्लेखनीय है।

अतः ईसाई मिशनरियों का योगदान भी खड़ी बोली को बोली के दायरे से बाहर निकालकर भाषा का स्तर प्रदान करने में प्रमुख रहा। इसके अलावा अन्य कारकों के सम्मिलित प्रभाव से इसे आजादी के बाद मानक स्वरूप दे पाना संभव हो सका।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' के सुझाव

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

देवभाषा संस्कृत की व्यवहृत लिपि देवनागरी को राजभाषा हिन्दी की लिपि भी बनाया गया। वस्तुतः देवनागरी लिपि के अन्य भारतीय भाषाओं के लिपियों से भी एक साम्य था जिस कारण इसे मानकीकृत करना अपरिहार्य था।

वाक्य गठन पर ध्यान दें।

इस दिशा में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। इसके सुझाव निम्नलिखित हैं —

* शब्दों में शिरोरेखा का प्रयोग ऐच्छिक हो।

* मात्राओं की समस्या समाधान हेतु अ स्वर की भी वर्णमाला का किया संभव है जैसे - अ, आ, अि, अी, ... अं, अः।

* ञ, ङ, ण, न इन वर्णान्त व्यंजनों को समेकित कर मानकीय रूप में किसी एक को स्वीकार करना।

1/10

अव्यवस्थित उत्तर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) ब्राह्मी लिपि और नागरी लिपिः अंतर्संबंध

ब्राह्मी लिपि को नागरी लिपि की मातृ लिपि माना जा सकता है जो अशोक के समय प्रचलित थी। अशोक के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि नागरी व ब्राह्मी लिपि में काफी साम्य है।

गौरतलब है कि अशोक के बाद अंतिम केन्द्रीय सत्ता भारत में हर्षवर्धन ने स्थापित की थी। बाद में हर्ष के पतन के बाद ब्राह्मी लिपि का क्षेत्रीय विकेंद्रीकरण हुआ। इससे ब्राह्मी की तीन उत्तराधिकारिणी लिपि अस्तित्व में आई — शारदा लिपि, कुटिल लिपि और नागरी लिपि।

वास्तव में नागरी लिपि का उक्त नामकरण क्यों किया गया, इस संदर्भ में विद्वानों में मतभेद है।— इसके कारणों में इसका नगरों में प्रयुक्त होना, गुजरात के नागर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ब्राह्मणों द्वारा प्रयुक्त होना या फिर ब्रिस्ट मतों की लिपि का होना।

बहरहाल देवभाषा संस्कृत की माध्यम होने से यह देवनागरी कहलाई जो वर्तमान में राष्ट्रभाषा हिन्दी की लिपि भी संवैधानिक रूप से स्वीकृत है (अनुच्छेद - 343)। कुल मिलाकर नागरी से देवनागरी की यह यात्रा ब्राह्मी से ही शुरू होती है।

ठीक है

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आर्य समाज का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता आरंभ से ही शुरू हो गई थी। इसीलिये गैर हिन्दी भाषी क्षेत्रों के नेताओं, समाजसुधारकों व उनके द्वारा स्थापित संस्थाओं, पुस्तकों व पत्रिकाओं का भी हिन्दी भाषा माध्यम बनी।

उपरोक्त समाजसुधारकों में स्वामी दयानन्द सरस्वती का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने 1875 में आर्य समाज नामक संस्था की स्थापना बम्बई में की। आरंभ में ~~स्वामी जी~~ आर्य समाज में गुजराती भाषा में कामकाज होता था। बाद में केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से हिन्दी का प्रयोग होने लगा। स्वयं स्वामी जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिन्दी में ही की।

आर्य समाज की शाखायें बम्बई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

संयुक्त प्रान्त व पंजाब में स्थापित की गई।

आर्य समाज का भारतीय संस्कृति के उत्थान हेतु ~~पुर~~ पुनरुत्थानवादी दृष्टिकोण और वैदिक शिक्षा का प्रसार हिंदी में भी जन-जन तक पहुँचाया।

आर्य समाज द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थाओं — दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज व गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय में भी हिन्दी शिक्षण ~~का प्रचार~~ का माध्यम बनी।

अतः एक संस्था के तौर पर आर्य समाज का योगदान हिन्दी ~~के~~ के विकास में सर्वप्रमुख है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) प्रताप नारायण मिश्र

प्रतापनारायण मिश्र भारतेंदु युग के एक प्रमुख गद्य लेखक थे। ये बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', बालकृष्ण भट्ट, भारतेंदु जी के साथ भारतेन्दु मण्डली के सदस्य थे। मिश्र जी का योगदान भारतेंदु युग में कई अधुनातन विधाओं जैसे — निबन्ध, नाटक, उपन्यास आदि में ~~एक योगदान दिया~~। रहा है।

प्रतापनारायण मिश्र ने 'ब्राह्मण' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया जो जबलपुर से प्रकाशित होती थी। इस पत्रिका का न केवल साहित्यिक योगदान है बल्कि पत्रकारिता में भी योगदान है। मिश्र जी ने कली-कौतुक भी लिखी।

4½/10

और गहराई लाएं

प्रमुख निबंधों एवं नाटकों का नामोल्लेख भी करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) कविवचन सुधा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविवचन सुधा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सम्पादित मैगजीन है। इनकी अन्य पत्रिकायें हैं- हरिश्चन्द्र मैगजीन, बाला बोधिनी।

भारतेन्दु जी के समय हिन्दी लेखन में एक भाषाई द्वैत विद्यमान था। राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द उर्दू बोझिल हिन्दी में लेखन कर रहे थे जबकि राजा लक्ष्मण सिंह संस्कृतनिष्ठ हिन्दी। भारतेन्दु जी ने कवियों को काव्य सर्जना के मानदण्डों के आधार पर कवि वचन सुधा पत्रिका के माध्यम से कवियों को निर्देशित किया। इस दौर की यह प्रमुख पत्रिका थी जो इस भाषाई द्वैत का मध्यम मार्ग निकाल सकी और लेखकों को भाषाई द्वन्द्व से निकालकर सृजनात्मक लेखन हेतु प्रेरित किया।

प्रकाशन वर्ष बताएँ

और विस्तार बताएँ

5/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिन्दी की मनोवैज्ञानिक उपन्यासधारा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचन्दोत्तर युग में उपन्यास लेखन की एक धारा मनोविज्ञान के सैद्धान्तिक पक्ष को लेकर आगे बढ़ी। इसके प्रमुख हस्ताक्षर – जैनेन्द्र, अज्ञेय व इलाचन्द्र जोशी हैं।

जैनेन्द्र – ~~मृणाल~~ परख, सुनीता, त्यागपत्र

अज्ञेय – शेखर एक जीवनी ~~(भाग - 1 तथा 2)~~, नदी के द्वीप

इलाचन्द्र जोशी – सन्यासी, जहाज का पंछी

डॉ० देवराज – अजय की डायरी, पथ की खोज।

जैनेन्द्र मनोवैज्ञानिक उपन्यास धारा के प्रथम समर्थ हस्ताक्षर हैं। इन्होंने उपन्यासों में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की निजता को उद्घाटित किया गया है।

अज्ञेय ने शेखर एक जीवनी की रचना करके एक प्रकार से क्रान्ति ला दी। शेखर व शशि की ~~कहानी~~ कथा के माध्यम से

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उपन्यास ने पाठक के अन्तर्मन के तंतुओं को झकझोर दिया।

वस्तुतः मनोवैज्ञानिक उपन्यास का सैद्धान्तिक पक्ष मनोविश्लेषण सिद्धान्त पर आधारित है जिसके प्रणेता पश्चिम में सिगमण्ड फ्रायड, एडलर व युंग माने जाते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति मन के तीन स्तर हैं- चेतन, अचेतन और अवचेतन। इस सिद्धान्त में इद, अहम, उत्कृष्ट अहम (Id, Igo & Super ego) को महत्व मिला है।

इन उपन्यासकारों की खास बात यह है कि न केवल इन्होंने उक्त जड़ सिद्धान्त को केन्द्र में रखकर उपन्यास लिखे, वरन भारतीय मूल्यों जैसे - गांधीवाद, समाजवाद, संस्कृति आदि को भी समाहित किया है। निश्चित रूप से इस धारा ने हिंदी उपन्यास लेखन को एक नई दिशा दी।

कौन से हैं

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) केशवः कठिन काव्य के प्रेत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य केशव भक्तिकाल व रीतिकाल के सन्धिकाल के कवि हैं ये ओरछा दरबार में थे। इनकी रचनाओं — कविप्रिया, रसिकप्रिया, जहाँगीर जस चन्द्रिका आदि में रामचन्द्रिका प्रसिद्धि का प्रमुख आधार है। रामचन्द्रिका रामकथा को आधार बनाकर लिखा गया प्रबन्ध काव्य है।

आचार्य केशव को रामचन्द्र शुक्ल ने कठिन काव्य का प्रेत कहा है। इस सन्दर्भ में केशव का एक पद देखें जहाँ उन्होंने सूर्य की तुलना आकाश में उसी प्रकार की है जैसे पेड़ पर बन्दर चढ़ता है —

"चढ़्यो गगन तरु धाय,
दिनकर वानर अरुण मुख"।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

राम के वनवास के बाद जब भरत अपने ननिहाल से लौटकर माँ कैकेयी से पिता का हाल चाल पूछते हैं तो कैकेयी का संवाद सच्य रूप में केशव राम वनवास, व पिता का देहान्त एक ही छन्द में कहला देते हैं —

" मातु कहाँ नृप तात,
गये सुरलोकहिं,
क्यो ?
सुत शोक लये।"

केशव की भाषा क्लिष्ट संस्कृतनिष्ठ ब्रजभाषा है जो सामान्य अल्पशिक्षित व्यक्ति की समझ से परे है —

(उदाहरण) —
" जदपि सुजाति सुलच्छनी,
सुबरन सरस सुवृत्त
भूषन बिनु न बिराजई,
कविता बनिता मित्त।"

उदाहरण

उपयुक्त नहीं है

आचार्य शुक्ल ने केशव को कठिन काव्य का प्रेत अवश्य कहा लेकिन उनकी संवाद योजना की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

4½/10

और नहीं मार्क

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation